



बर्फ के पहिए

Abhishek Singh Kulhadiya

Time Flies

You know what I'm saying, Right?

Explore

And don't forget to

LIVE

LOVE

LAUGH



बर्फ के पहिए

क्या आपने कभी फ़र्ज़ किया है कि एक ठंड की शाम आप अपने पूर्णतया आरामदायक कमरे में ठंड के मज़े ले रहे हो, और बस चंद घण्टो बाद ही अपनी घुमक्कड़ जिज्ञासा की नादानी की वजह से बर्फीले तूफानो में जीवन से संघर्ष कर रहे हो, जी हाँ कुछ ऐसी ही थी मेरी ये यात्रा। जो कुछ समय के लिए तो यातना सी भी प्रतीत हुई। यह बात है 3 जनवरी 2020 की, मैं हिमांचल प्रदेश के मंडी शहर में स्थित आई. आई. टी. कमांड में शिक्षा रत हूँ। मैं अपने होस्टल के कमरे में आराम से लेटे हुए मोबाइल पर गेम खेल रहा था, कि मेरे दरवाजे पर दस्तक होती है। मैं देखता हूँ कि मेरा एक सहपाठी दरवाजे पर खड़ा है- "दोस्त कल पराशर चले"। मैं उसके इस आमंत्रण से कुछ भौचक्का रह जाता हूँ, क्योंकि वह मेरा कोई मित्र नहीं है और इससे पहले हम कभी साथ घूमने नहीं गए हैं, पर मेरे घुमक्कड़ स्वभाव की वजह से मैं कहता हूँ- "बिल्कुल चलो कल निकलते हैं तैयारी कर लो"। वह चेहरे पे मुस्कान लिए जाने लगता है कि दरवाजे पर ठहर जाता है, "निकलते हैं मतलब" मैं अपने कनपुरिया अंदाज में उत्तर देता हूँ- अमा यार निकलते हैं, फिर देखो जहाँ तक पहुँच जाए।

मेरे अनिश्चित होने का कारण यह था कि हमने ये यात्रा साईकल से करने का तय किया था। मुझे अभी पहाड़ों पर साईकल चलाने का अनुभव नया नया ही था और मेरे इस सहपाठी का मुझसे भी कम। इससे पहले मैंने साईकल पर छोटी छोटी यात्राएँ ही की थी, 10-12 किलोमीटर लम्बी और 400-500 मीटर ऊँचाइयों वाली जहाँ पर चढ़ाईयाँ भी सामान्य ही थी। यद्यपि मुझे वो यात्राएँ ही बहुत थका देने वाली लगती थी। पराशर हमारे यहाँ से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी और कॉलेज की तुलना में 1700 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक बेहद खूबसूरत झील है। हमने सुन रखा था, कि सर्दियों में झील जम जाती है, और इसपर एक टापू भी है, जो झील में स्थिर रहने के बजाये अपना स्थान बदलता रहता है। हम इससे पहले कभी पराशर नहीं गए थे। हम आने वाली सभी चुनौतियों से पूर्णतया अनभिज्ञ थे, परंतु मेरे सहपाठी में ऊर्जा और उसका आत्मविश्वास कुछ उतना ही विशाल था जितना हमारे होस्टल से दिखता ग्रिफ़िन पहाड़।

ग्रहण का ऊर्जायमान सूर्य

वह हिन्दू धर्म में एक मान्यता है ना कि जब सूर्य को ग्रहण लगता है तो वे कष्ट में होते हैं, पर साथ ही उस समय उनका तेज दोगुना बढ़ जाता है। अब अगली सुबह 6 बजे मेरे सहपाठी फिर मेरे कमरे के बाहर खड़े मिलते हैं इस बार उनके मुख पर कुछ ग्रहण वाले सूरज का कष्ट देखा जा सकता है। वह बाहर छत की ओर संकेत करते हुए कहता है- "भाई! बारिश हो रही है"। मैं कुछ बोल पाता, उससे पहले ही वो कहता है "पर हम फिर भी जाएंगे, तैयारी कर लो।" वो मान्यता है ना कि ग्रहण के सूरज का तेज दोगुना हो जाता है, ये उसकी इच्छाशक्ति में दिख रहा था। तैयारी तो हम उत्तेजना के कारण कल शाम को ही कर चुके थे। खाद्य सामग्री, आवश्यक वस्त्र, कुछ दवाएँ और ट्रैकिंग व साइकिलिंग से संबंधित सुरक्षा उपकरण। पर इसके साथ ही इसका भी ध्यान रखना था कि बैग का वजन ज्यादा न बढ़े और साथ ही कोई आवश्यक वस्तु भी न छुटे, वो हम पढ़ते हैं ना "ऑप्टिमाइजेशन"। हमारी यात्रा की योजना सुनकर सब हमारा उपहास कर रहे थे और इससे हमारी इच्छाशक्ति प्रबल हो रही थी। हम तैयार हो कर मेस की ओर बढ़े और वहाँ से नाश्ता बैग में रखकर बस वही से निकलने की योजना बनाई। नाश्ता न करने के पीछे मेरा पुराना अनुभव था, की नाश्ता करने के बाद साईकल चलाना कुछ मुश्किल सा हो जाता है। मेस पहुंचने

पर हम लोगो को हेलमेट पहने देख मेंस वाले भैया भी पूछ बैठे-"कहां की तैयारी है सर्"। हम दोनों ने एक आवाज में उत्तर दिया- बस निकल रहे हैं, और एक दूसरे की तरफ देख के मुस्करा दिए।



पैर और पैडल

जी हाँ ये सफर तब तक ही है, जब तक इन दोनों का तालमेल है। उसके बाद तो भैया बस वापस ही लुढ़क लो।

अब सुबह के 8:15 बज चुके थे, और हमारी यात्रा अब शुरू हुई। पराशर का रास्ता सालगी, नार्थ कैंपस, कटौला, संदोहा, बाघी व हलगढ़ इत्यादि स्थानों से होते हुए जाता है, और उस समय की स्थिति ये थी कि हमारे लिए तो बिना रुके नार्थ कैंपस जो कि 3.5 किलोमीटर है तक पहुंचना भी साँस फुला देने वाला होता था। परंतु मेरे साथ तो एक बेकरार आशिक था। जिसकी माशूका थी पराशर की घाटिया, हाँ मैं अपने सहयात्री की ही बात कर रहा हूँ। उस पर आलम भी कुछ ऐसा की मानो माशूका घर पर अकेले हो, तो भैया इनके पैर और पैडल का तालमेल तो नहीं टूट रहा था और उन्हें देखकर मजबूरी में मेरा।

राह और राहगीर

राह जो सुन्दर थी, वो निसंदेह अपने राहगीरों की वजह से ही थी। उहल नदी दाईं तरफ हमारी दिशा के विपरीत बह रही थी, और हमारे सहयात्री को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो ये जो विपरीत बहता जल है। ये माशूका के घरवाले ही है, जो उससे दूर जा रहे हैं, और हमारे सहयात्री की उत्तेजना को बढ़ा रहे हैं। खैर इसके अलावा हमारे कुछ और भी राहगीर थे। चह चहाते हुए पंछियों की आवाज ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो कोई कानो में गीत गा रहा हो तो वही दोनों तरफ ऊँचे-ऊँचे हरे भरे स्तब्ध पर्वत ऐसे प्रतीत हो रहे थे, जैसे अपनी जगह खड़े हो कर बस गर्दन घुमाते हुए हमें घूरे जा रहे हो। इन ठंड के दिनों में जब सूरज की किरणें पहाड़ों के वृक्षों से होते हुए झिलमिल हम पर पड़ती थी तो ऐसा लगता था मानो किसी ने कमरे में

झरोखा खोल दिया हो। अब घड़ी पर 9:20 लग चुका था, और हम कटौला ग्राम पहुँच चुके थे। यह ग्राम टिहरी, थाह, अरनेहर और खन्नाह के पहाड़ों से घिरी एक छोटी सी घाटी में बसा है। हम यहां चाय नाश्ते के लिए कुछ देर रुके और ज्यों ही आगे बढ़े तो राह में चुनौतियों का आगमन शुरू हो गया। मेरी साइकल की गेयर सिस्टम में कुछ खराबी आ गयी, पर जैसा हमने कहा है, ये राह इसके राहगीरों की वजह से ही खूबसूरत है। वहाँ के कुछ गाँव वालों ने हमारी साइकल सुधारने में निस्वार्थ



मदद की और साइकल चलने की स्थिति में आ गयी। अब हम कुछ ही देर में संदोहा पहुँच चुके थे। यहां से पहाड़ों पर बर्फ दिखना शुरू हो गयी थी। यहाँ पर मुझे एक छोटा सा ब्रेक लेना था। ब्रेक लेने का कारण बर्फले पहाड़ों का आनंद लेना नहीं था। यहां इसी गांव में सड़क से लगे एक मकान में मेरे 2 मित्र रहते हैं अर्जुन(5) और नेहा(4)। हम अक्सर जब यहां साइकिलिंग करने आते हैं तो इनकी मीठी मीठी बातों से सारी थकान मिट सी जाती है, तो बस हर बार की तरह इस बार भी दोनों की चुलबुली बातों ने हमारी थकान एक दम मिटा दी, पर अभी तो बस ये इस सफर की शुरुआत थी।

ग्लूकोस का घोल

संदोहा पार करने के बाद अब रास्ता दो भागों में बंट जाता है। बाईं ओर सड़क टिहरी, रहला होते हुए कांडी पर्वत के रास्ते कुल्लू की ओर जाती है, और दाईं ओर के रास्ते पर है हमारी मंजिल। हम यहाँ पर पहुँच के बहुत खुश थे क्योंकि अब रास्ता एक दम आसान सा दिख रहा था, पर वो कहते हैं न कि जब जिंदगी डंडा करना बंद कर दे तो समझ लो अब बांस लेने गयी है। अब रास्तों की ढलान अच्छी खासी बढ़ गयी थी। कुछ देर चलने के बाद हम दोनों इतना थक गए कि, वही सड़क

किनारे जमीन पर लेट गए। घड़ी का कांटा 10:30 बजा चुका था, और रास्ते की मुश्किल हमारे 12। अब न तो नदी की कल कल अच्छी लग रही थी और न ही पंछियों की चह चहाहट। तब ही रिश्ते की तरह मेरे साथी ने अपने झोले से निकला अमृत(ग्लूकोस का घोल)।



साइकल की नाव

कुछ देर आराम करने व खाने पीने के बाद हमने तय किया कि अब हम बागी जो यहाँ से कुछ 5 किलोमीटर दूर था, तक बिना रुके जाएंगे। बढ़ती ढलान के चलते अब हम कैंपस की तुलना में लगभग 500 मीटर की ऊँचाई पर आ गए थे। ठंड अब इतनी बढ़ गयी थी, कि कच्ची सड़को के कीचड़ का पानी एक सफेद काँच की तरह जम गया था। जिसपर कई बार साइकिल का संतुलन भी बिगड़ा, पर हम गिरते संभलते अब बाघी पहुँच गए थे। यहां से कुछ आगे चलते ही क्या देखते हैं, कि उहल ने हमारा रास्ता रोक रखा है, नदी का पुल अंडर कंस्ट्रक्शन है। मोटर व्हीकल भी पानी की गहराई ज्यादा होने की वजह से फसते फसाते जा रहे हैं। अलबत्ता नदी का बहाव यहां कुछ न के बराबर ही था लेकिन अब चुनोती ये थी, कि अगर पैदल इस रास्ते को पार करते हैं, तो कपड़े और जूते पूरी तरह भीग जाएंगे, जिससे ठंड में आगे का सफर मुश्किल हो जाएगा, और अगर साइकल चला कर पार किया तो गिरने के आसार हैं, पर अगर सफल हुए तो आगे का रास्ता कुछ आसान हो जाएगा। फिर क्या था बना दी साइकल की नाव, अमा यार लोगो को बहादुरी के जुमले भी तो सुनाने थे।



चुनेटि लाल की चुनौतियां

घड़ी के दोनों हाथ अब उत्तर की और हाथ जोड़े खड़े थे। थकान भी अपनी चरम सीमा पर थी। टांगे मानो कह रही हो मेरे ही भाग्य फूटे थे, जो मैं इनके साथ आ गयी लेकिन आत्मशक्ति ने जैसे संदीप माहेश्वरी जी को ज्यादा सीरियस ले लिया हो वो अलग ही उत्साहित थी। वहां से गुजरते दो बाइक चालको से हम चॉकलेट खाते खाते मारमिक आवाज में पूछ बैठे- "भैया पराशर यहां से कितनी दूर है"। उत्तर में हमारी तरफ हँसते हुए देखकर दोनों कुछ एक राग में तंज की ध्वनि में बोले-"15 किलोमीटर लेकिन पहुँच नहीं पाओगे"। ये बात हमारे माहेश्वरी जी के फैन को बिल्कुल हिट कर गयी।

फिर क्या था हमने बची हुई चॉकलेट बैग में रखी और साइकल उठा के पूरे जोश के साथ चल दिए, अरे कुछ दूर तक लगभग 20 कदम फिर हमने एक दूसरे की तरफ देखा, अच्छे सहचालक के भांति एक दूसरे की भावना समझी और वही बैठ गए, और बैग से बची हुई चॉकलेट निकाल के खाने लगे। उतने में मेरा सहयात्री मेरी तरफ देखकर हसते हुए बोला- लाइफ इस टफ ब्रो, डॉट वरी अब हम साइकल थोड़ी देर पैदल ही लेकर चलेंगे। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसने मेरे मन की बात पढ़ ली हो।



कछुआ और खरगोश

1 बज चुके थे और मंजिल से दूरी 10 किलोमीटर अभी भी शेष थी। हमारी चाल अब इतनी तेज थी कि बोझा लिए हुए पैदल जाती अम्मा भी हमसे आगे निकल गयी। हमने अपनी चाल की तेजी से सारे कीर्तिमान तोड़ते हुए 1.2 किलोमीटर की दूरी बस 1 घण्टे में ही तय कर ली और पहुँच गए "कैफे वन लव"। हमने तय किया, कि अब यहाँ भोजन करके आगे बढ़ेंगे। यहां से आगे रास्ते पूरी तरह से बर्फ से ढक गए थे। भोजन बनाने वाले चाचा से बातचीत के बीच में वो बोले : "सर् जी वैसे आप लोग कहा से साईकल चलाते हुए आ रहे हैं।" खा पी के अब रंगबाजी तो चढ़ ही गयी थी और हमारे यहाँ कानपुर में एक कहावत है- "पेट में पड़ा अन्न तो सूजा हरामीपन"। हम रंगबाजी से बोले- "अरे चाचा पास में ही बस आई. आई. टी. कमांड से"। चाचा : "अरे वाह बड़ा मुश्किल रहा होगा।" अब तो रंगबाजी आसमान चूमने लगी थी। हम बोले- "अरे कहा मुश्किल चाचा आसान ही है"। चाचा बोले- "काफी ऊपर है पराशर कमांड से इतनी चढ़ाई चढ़ जाती है, अच्छा गेयर वाली साईकल है ना"। "अरे चाचा साईकल से कुछ नहीं होता खुद में दम होना चाहिए"- हम बोले। तब ही पास में खड़ा एक कतई हरामी लौंडा तंज मारते हुए ऐसा बोला कि हम रंगबाजी के आसमान से अब सीधे जिल्लत के पाताल में जा गिरे- "तो सर् जी फिर काहे पैदल साईकल खिंचे चले आ रहे थे, हम नीचे देखे थे आपको कछुआ लग रहे थे। पैदल जाते लोग भी खरगोश लग रहे थे आपके सामने"।



पंजाबी, परेशानी और तेंदुआ

अब हम पराशर से सिर्फ 8.5 किलोमीटर दूर थे। सड़क पर ताजा गिरी बर्फ रुई की तरह पड़ी हुई थी। पहिये और बर्फ के मिलन से जो ध्वनि उत्पन्न हो रही थी, वो कलेजे को ठंडक पहुँचा रही थी। पहिए भी अब पूरा बर्फ के ही रंग में रंग गए थे। पूरी तरह से बर्फ से ही लिप्त हो गए थे और ऐसे प्रतीत हो रहे थे कि मानो बर्फ के पहिए हो। हमने तय किया कि आगे की यात्रा हम साइकल चला कर ही पूरी करेंगे। कुछ दूर चलने के बाद बर्फ से सने पहिए, अधिक बर्फ की वजह से जाम हो गए थे। हमारे दोनों तरफ लम्बे-लम्बे बर्फ से लदे देवदार के वृक्ष इतने घने थे मानो उन्होंने एक दूसरे से मिलते हुए बर्फ की एक आभासी छत सी बना दी हो। बर्फ पर पड़ती थोड़ी बहुत सूरज की रोशनी चारो तरफ कुछ ऐसा चका चौंध माहौल बना दे रही थी, जैसे किसी ने कमरे में बहुत सी सफेद लाइट्स चालू कर दी हो। हिमपात भी इतना अधिक हो रहा था कि हम दोनों स्नो मेन बन चुके थे। अभी हम इस मनमोहक माहौल में कुछ मगन हुए ही थे, की मेरे सहयात्री बोल उठा-"भाई तेंदुआ"। हिमपात की वजह से मेरे चश्मे से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था मैं बोला- अबे भग कुत्ता है, पर ज्यो ही मैने अपना चश्मा साफ किया तो हम दोनों ही अब स्तब्ध खड़े रह गए। हम उसे और वो हमें बस देखे ही जा रहा था। सुन्दर इतना- कि बीच में भय भूलकर मैं बस उसे एक टक निहारने ही जा रहा था। मौसम खराब होने की वजह से हमे अभी तक कोई ट्रैक पर मिला नहीं था। हमारी फ़टी तो थी ही, कि पीछे से एक शोर हमारी ओर धीरे धीरे बढ़ रहा था। शायद इसे सुन के ही वो चला गया, या जो भी कारण था, पर

हमारे लिए तो ये शोर जैसे मानो फरिश्ता ही था- ये था कुछ 7-8 नौजवान पंजाबियों का गुट या यूँ कहें कि परेशानियों का गुट। यह लोग अलग ही मस्त मौला थे। ये नाचते गाते ,खाते-पीते और खाली पैकेट वही फेकते हुए बर्फ के मज़े लेते चले जा रहे थे। अब हम भी इनके ही साथ हो लिए थे क्योंकि सफर लम्बा था और जंगल घना।उधर से गुजरते कुछ राहगीरों ने इन्हें गन्दगी फैलाने से टोका तो, ये उनका ही उपहास करने लगे।हम भी क्या पता था कि इस साथ का भुगतान हमें आगे करना पड़ेगा।



त्रुटि और तूफान

अब घड़ी ने हमारे न चाहते हुए भी 5 बजा दिए थे।पराशर से 6 किलोमीटर पहले एक जगह है, टील यहां कुछ छोटे मोटे ढाबे और रुकने की जगह है। अब हम वहाँ पहुँच चुके थे। यहाँ हमने लकड़ी की आग में हाथ सेके, कुछ नए दोस्त बनाए, आसमान में तप्त लोहे की तरह पिघलते सूरज के अस्त होने के बेहद खूबसूरत नजारे का आनंद लिया और फिर मैंने तो तय कर लिया, अब बस आज शाम यही रुकेंगे और सुबह जल्दी उठके ट्रैक पर निकल जाएंगे। पर आपको तो पता ही है, मेरे साथ एक बेकरार आशिक जो है, और अब वो इतना नजदीक आ कर पूरी एक शाम का इंतज़ार करले अपनी महबूबा से मिलने के लिए

मुश्किल था। तो उसके बहुत जिद्द करने पर मैं मान गया रात में ट्रैक के लिए। मेरे बहुत कहने पर भी उसने भोजन नहीं किया और यहाँ ही हो गयी त्रुटि आपको बता दु, बर्फ में खाली पेट ठण्ड ज्यादा लगती है। हम कुछ 6 बजे के लगभग उसी गुट के साथ ट्रैक के लिए निकल लिए। हमने साईकले वही ढाबे पर ही छोड़ दी। हमारे कपड़े जूते सब बर्फ से भीग चुके थे जूतों में बर्फ घुसती जा रही थी। पर वो रात भी क्या रात थी वो प्रकाश का परावर्तन(reflection) तो सुना ही होगा। चांदनी जब अंधेरे में बर्फ पर पड़ती है ना तो वो परावर्तित हो कर मानो अलग ही, भोर की सुबह जैसी रोशनी कर देती है। रास्ते में बर्फ इतनी ज्यादा थी, कि हमारे पैर बर्फ में धसे जा रहे थे। कुछ और आगे बढ़ने पर हम क्या पाते हैं। हवा के साथ मिल के बर्फ जो वातावरण आलग ही गुस्से में विचरण कर रही है और, बहुत ही भयानक लग रही है। ये थे बर्फीले तूफान।



प्राण और पी डब्लू डी

हम जैसे तैसे तूफान पार करते हैं। अब रात के 9 बजे चुके हैं। भूखे पेट होने के कारण मेरे सहयात्री की हालत कुछ गम्भीर सी हो गयी है। ठंड उसके पैरों से इतनी अधिक घुस चुकी है, कि वह अब अपना होश कुछ खो चुका है, और बस यही बोला जा रहा है “मैं अब नहीं चल सकता मेरे पैर महसूस नहीं हो रहे हैं , भाई मुझे ऐसे पैरालिसिस हो जाएगा”। पराशर का फारेस्ट रेस्ट हाउस अब हमें दिखना शुरू हो गया था, कुछ 800 मीटर बचा होगा। पर इतनी थकान और भारी बर्फ पर ये 800 मीटर भी 8 किलोमीटर जैसा प्रतीत हो रहा था, हम रेस्ट हाउस पहुँचे। अब तक मेरे सहयात्री की हालत बहुत गंभीर हो चुकी थी। उसे पैर सेकने की बहुत अधिक आवश्यकता थी। तब ही हमें मिलता है एक झटका- "भाईसाहब अंदर मत आइए यहां कोई रूम खाली नहीं है"। क्या देखते हैं, ये तो वही आदमी है जिसका इन लोगों ने नीचे मजाक उड़ाया था, गंदगी फैलाने से रोकने पर। पहाड़ियों को वादियां गन्दी करने वालों से बहुत चिढ़ होती है। मेरे लाख विनती करने पर भी की, हम इनके साथ नहीं हैं, ये अलग है हम

आई. आई. टी. से आए हैं, उसने हमारी एक न सुनी। गेंहू के साथ अब घुन भी पीस गया था, और मेरे सहयात्री की हालत खराब होती जा रही थी। अतः मुझे अपने कनपुरिया रूप में आना ही पड़ा- "कौन है यहां पर केअर टेकर बुलाओ साले को अभी डी. एम. साहब को फ़ोन लगाता हूँ, उचित कार्यवाही करवा के सबको टाइट करवाऊंगा" मैं गुस्से में ऊँची आवाज में बोला। अब एक लड़का मेरी तरफ आया और बोला सर् सच मे कोई कमरा खाली नहीं है, चाहे तो आप खुद चेक कर लीजिए। आप चाहे तो आंगन में बैठ सकते हैं। मैं अभी इनके लिए पानी गर्म करके लाता हूँ, ये पैर सेक ले तो कुछ अच्छा लगेगा। मैं भी अब नर्म हो गया क्योंकि मुझे गुस्सा बस अपने सहयात्री के कष्ट की वजह से ही था और अब वह उस चीज़ के लिए कॉपरेट करने को तैयार थे। तब ही उस पंजाबी गुट से एक लड़का आता है और बोलता है-"चलो वीरो पी डब्लू डी रेस्ट हॉउस में बात हो गयी है वहाँ तीन कमरे खाली हैं"। मैंने अपने सहयात्री की तरफ देखा और जोश भरी आवाज में उसका मनोबल बढ़ाते हुए बोला- पी डब्लू डी प्राणदाता।



कहानी आगे और भी है पर फ़िलहाल के लिए यहाँ रुक जाते हैं।

अपनी राय देने के लिए फेसबुक और इंस्टा पर

#BarfKePahiye का इस्तेमाल करें।